इकाई 2 तुलनात्मक प्रविधि और तुलना के तरीके

इकाई की रूपरेखा

2.0 उद्देश्य

2.1 प्रस्तावना: तुलना क्या है ?

2.2 प्रविधि संबंधी कुछ विचार

2.3 तुलनात्मक प्रविधि : तुलना क्यों

- 2.3.1 सामाजिक वैज्ञानिक अनुसंधान
- 2.3.2 समन्वित सोच

2.4 तुलना की प्रविधियां

- 2.4.1 प्रयोगात्मक प्रविधि
- 2.4.2 उदाहरणों का अध्ययन (केस स्टडी)
- 2.4.3 सांख्यिकी प्रविधि
- 2.4.4 विषय केंद्रित तुलना
- 2.4.5 ऐतिहासिक प्रविधि

2.5 सारांश

2.6 शब्दावली

2.7 कुछ उपयोगी पुस्तकें और लेख

2.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

2.0 उद्देश्य

आप सब लोग तुलना से भलिभांति परिचित होंगे। अपनी रोजमर्रा की जिंदगी में आप निर्णय लेने से पहले तुलना अवश्य करते होंगे; जैसे बाजार में फल, सब्जी, पुस्तक या अन्य कोई भी सामान खरीदने से पहले आप बाजार में उपलब्ध विभिन्न वस्तुओं की तुलना करते हैं, तब आप सामान खरीदते हैं। इसी प्रकार आपको किस कॉलेज में पढ़ना है, किस प्रकार का कैरियर चुनना है आदि में भी आप तुलना का सहारा लेते हैं। लेकिन जब सामाजिक और राजनैतिक परिघटना की तुलना की जाती है तो तुलना को एक प्रविधि के रूप में अपनाया जाता है जो अन्य प्रविधियों से सटीक और समीचीन होती है। इस पर विचार करने से पूर्व हमें यह जान लेना चाहिए कि तुलनात्मक प्रविधि क्या है और अन्य तुलना करने वाली प्रविधियों जैसे- प्रयोगात्मक और सांख्यिकी से इसकी भिन्नता क्या है? यहां हमें यह समझ लेना चाहिए कि दूसरी प्रविधियों की अपेक्षा तुलनात्मक प्रविधियों का ही प्रयोग क्यों करना चाहिए। इसके अलावा इसकी भी जानकारी होनी चाहिए कि तुलना के लिए कौन सा तरीका अपनाया जाना चाहिए या क्या रणनीतियां अपनानी चाहिए। इस इकाई में हम इन्हीं मुद्दों पर विचार करेंगे। इस इकाई को पढ़ने के बाद आप समझ सकेंगे कि :

- प्रविधि क्या है ? तुलनात्मक प्रविधि क्या है ? तुलनात्मक प्रविधि को अन्य प्रविधियों से कैसे अलग किया जा सकता है?
- तुलनात्मक प्रविधि का उपयोग क्यों किया जाता है ? इस प्रविधि से किस प्रकार की परिघटनाओं को बेहतर ढंग से समझा/व्याख्यायित किया जा सकता है ?

- राजनीति के अध्ययन में तुलनात्मक प्रविधि का उपयोग किस प्रकार किया जाता है।
- अन्य प्रविधियों की अपेक्षा इस प्रविधि के क्या लाभ और हानि हैं ?
- तुलनात्मक राजनीति में तुलनात्मक प्रविधि का क्या महत्व है ?

इस इकाई के प्रत्येक भाग में बोध प्रश्न दिए गए हैं जिनसे आपको इकाई को समझने में मदद मिलेगी। इकाई के अन्त में शब्दावली के अन्तर्गत कुछ शब्दों की व्याख्या की गई है और उनका अर्थ समझाया गया है। इकाई में इन शब्दों को रेखांकित कर दिया गया है। इन रेखांकित शब्दों का अर्थ आप शब्दावली में देख सकते हैं।

2.1 प्रस्तावना: तुलना क्या है ?

अभी हमने इस बात की चर्चा की कि किस प्रकार हमारे दैनिक जीवन में कदम-कदम पर तुलना का उपयोग किया जाता है। हम शून्य में नहीं रहते, प्रतिदिन हमारा सामना कई लोगों से होता है। अपने परिवेश को समझने, देखने ओर परखने में हम दूसरों से प्रभावित भी होते हैं। दूसरे शब्दों में जब हम अपने आस-पास की दुनिया को परखते हैं तो हम देखते हैं कि हमारा कई लोगों से संबंध है और हम कई घटनाओं से एक साथ जुड़े हुए हैं। यही संबंध हमें परिवार के साथ जोड़ता है। यही हमारे कामकाज करने के दौरान या कहीं आनेजाने के दौरान (जैसे बस में सफर करता हुआ सहयात्री) हम संबंध स्थापित कर लेते हैं। इस प्रकार के संबंध में एक नियमित पद्धति या एकरसता हो सकती है और यह भी हो सकता है कि उनके कुछ कायदे कानून हों जैसे बस का तयशुदा रास्ता, इसके खुलने -पहुंचने का समय आदि। यहां हम यह बताने की कोशिश कर रहे हैं कि प्रत्येक व्यक्ति की एक खास दैनिक दिनचर्या होती है। परंतु यदि हम समग्र रूप में देखें तो हम पाएंगे कि अनेक लोग यही दिनचर्या अपना रहे हैं। हम कह सकते हैं कि इन व्यक्तियों की दिनचर्या में एक नियमितता है जिसकी तुलना समानता के लिए की जा सकती है। एक बार समानताओं को एक साथ रखने पर असमानताएं और अनियमितताएं भी उभर कर सामने आएंगी। उनके जीवन में समानताओं और असमानताओं की व्याख्या भी की जा सकती है। आइए, इसे एक उदाहरण से समझें। मान लीजिए आप एक आवासीय परिसर में रहते हैं। यहां रहने वाले अधिकांश पुरुष चार्टर्ड बस से सुबह 8 बजे काम को निकलते हैं और शाम 6 बजे काम से वापस आ जाते हैं। कुछ लोग अपनी-अपनी कारों से सुबह 9 बजे घर से निकलते हैं और शाम 5 बजे घर वापस आ जाते हैं। इस प्रकार मोटे रूप से कॉलोनी के निवासियों को दो समूह में बांटा जा सकता है जो दो प्रकार की व्यवहार पद्धतियां अपनाते हैं। प्रत्येक समूहों की समानताओं और असमानताओं की तुलना की जा सकती है, उनमें समानताओं और असमानताओं की खोज की जा सकती है, प्रत्येक समूह में व्यक्तिगत परिस्थितियों और परिवेशों की तुलना की जा सकती है। परिवेश में पाई जानेवाली समानता के आधार पर जहां समानता की व्याख्या की जा सकती है वहीं उस परिवेश की अनियमितता या असमानता की व्याख्या भी की जा सकती है। उदाहरण के लिए जो लोग बस में जाते हैं, उनमें बहुत सी समानताएं मिल सकती हैं जैसे--वे एक बस में जाते हैं, उनके पास गाड़ी नहीं है, दफ्तर में वे लगभग एक ही पद पर काम करते हैं, उनका दफ्तर उसी बस रूट पर स्थित है आदि। जो लोग अपनी गाड़ी से दफ्तर जाते हैं उस समूह में भी कुछ समानताएं होंगी। इन दोनों समूहों की विभिन्न पद्धतियों की व्याख्या करते समय उस परिवेश का भी ध्यान रखना होगा जिसके कारण इन दोनों समूहों में समानताएं पाई जाती हैं जैसे – कार से जानेवाले लोग अलग-अलग दफ्तरों में जाते होंगे, जिनके दफ्तर अलग-अलग रूटों पर होंगे, उनके पास अपनी गाड़ियां होंगी, दफ्तर में वे बड़े पद पर होंगे। इस व्याख्या के अनेक आधार ढूंढ़े जा सकते हैं जाति, लिंग, राजनैतिक धारणा आदि। समानता और असमानता को परखते समय कार्य-कारण संबंध का भी ध्यान रखना चाहिए। उदाहरणस्वरूप गाड़ी से जानेवाले महिला/पुरुष ऐसा इसलिए करते हैं कि उनके दफ्तर तक कोई सीधी बस नहीं जाती है, उनके पास अपनी गाड़ियां हैं, इसलिए वे अपनी गाड़ी से जाना पसंद करते

हैं। इसी प्रकार उच्च वर्ग की महिलाएं अपने काम पर गाड़ी से जाना पसंद करती हैं। अभी हमने एक सामान्य और सरल सा उदाहरण लिया। अब हम उन जटिल तरीकों को देखें, सामाजिक मनोवैज्ञानिक जिसका प्रयोग तुलना के लिए करते हैं।

बोध प्रश्न 1

नोट : i) नीचे दिए गए स्थान में अपना उत्तर लिखिए।

ii) इकाई के अंत में दिए उत्तरों से अपने उत्तरों का मिलान कीजिए।

1) अपने आसपास के परिवेश को ध्यान से देखिए और तुलना का एक आसान अभ्यास कीजिए। यह भी बताइए कि कुछ व्यक्ति खास ढंग का व्यवहार क्यों करते हैं ?

.....

.....

.....

.....

2.2 प्रविधि संबंधी कुछ विचार

तुलनात्मक प्रविधि के अध्ययन से पहले आइए, हम यह जानने की कोशिश करें कि ' प्रविधि' आखिर है क्या? और उसे इतना महत्वपूर्ण क्यों जाना जाता है ? अपने अनुभवों से हम यह जानते हैं कि प्रविधि किसी भी मामले को समझने के लिए एक उपयोगी मददगार और कारगर तरीका है। उदाहरण के लिए – यह एक ऐसे जोड़कर बनाए गए फर्नीचर की तरह है जिसे उपयोग में लाने से पहले एक-एक कर जोड़ना पड़ता है। किसी परिघटना का अध्ययन करते समय कोई प्रविधि इसे अध्ययन करने के तरीके और साधनों से अवगत कराती है। फर्नीचर में तो हम जानते हैं कि यह कौन सा रूप धरेगा, परंतु अन्य मामलों में परिणाम या अंतिम रूप क्या होगा यह जानना मुश्किल होता है। ऐसा भी हो सकता है कि अंतिम परिणाम जानने के लिए हमारे पास कोई निर्देशिका भी न हो। हमारे पास केवल फर्नीचर के हिस्से और जोड़ने के उपकरण हों, दूसरे शब्दों में 'अवधारणाएं' और 'तकनीक' हों। किसी खास परिघटना को समझने या उसकी व्याख्या करने और उसके बारे में अधिक जानकारी प्राप्त करने के लिए इन अवधारणाओं (विचारों, सोच, धारणाओं), प्रविधि तकनीकों (आंकड़ा इकट्ठा करने के तरीके) का उपयोग खास तरीके से करना होगा। इसलिए यह कहा जा सकता है कि किसी खास अवधारणाओं और आंकड़ों के बेहतर संयोजन को ही 'प्रविधि' कहते हैं। निश्चित रूप से आंकड़ा संग्रहण के तरीके पर विचार करना होता है। यह भी विचार करना होता है कि किन अवधारणाओं का प्रयोग या अध्ययन करना है। इन सभी में एक संयोजन की जरूरत होती है। ताकि आंकड़ों का स्वरूप ऐसा हो और इसका संग्रहण इस प्रकार किया जाए और अवधारणाओं का प्रयोग इस ढंग से किया जाए कि अध्ययन में एक संगति हो ताकि हम सुव्यवस्थित ढंग से अध्ययन कर सकें। वैज्ञानिक जांच पड़ताल में प्रविधि की सुस्पष्टता और सटीकता पर विशेष बल दिया जाता है। अपनी विषयवस्तु की प्रकृति के अनुसार सामाजिक विज्ञान को उन प्रविधियों पर विचार करना होता है जो प्रयोगशाला में किए जाने वाले वैज्ञानिक प्रयोग की सटीकता या अन्य नियंत्रित परिवेश के नजदीक हों। हालांकि कई विद्वानों का यह मानना है कि तथाकथित 'वैज्ञानिक अनुसंधान' में बंधकर नहीं रहना चाहिए। इस संबंध में विद्वानों का विचार चाहे कुछ भी हो सभी प्रकार के अध्ययनों में सोच, खोज और अनुसंधान की 'प्रविधि' अपनाई जाती है। विद्वान अपने अध्ययन के लिए तुलनात्मक, ऐतिहासिक, प्रयोगात्मक, सांख्यिकी परक, आदि कई प्रकार की प्रविधियां अपनाते हैं। गौर करने की बात है कि इन सभी विधियों में अलग-अलग मात्राओं

में तुलना की जा सकती है। तुलनात्मक प्रविधि भी ऐतिहासिक, प्रयोगात्मक और सांख्यिकी विधियों के उपकरणों का उपयोग करती है। यहां यह भी ध्यान रखने की बात है कि तुलनात्मक प्रविधि का तुलनात्मक राजनीति पर एकाधिकार नहीं है। भौतिक, मानवीय और सामाजिक परिघटना से जुड़े सभी ज्ञान के क्षेत्रा में इसका उपयोग होता है। समाजशास्त्रा, इतिहास, नृशास्त्रा, मनोविज्ञान आदि समान अधिकार के साथ इसका प्रयोग करते हैं। इन अध्ययन क्षेत्रों में अध्ययन की तुलनात्मक विधि अपनाई गई है। जिसे कहीं 'पार-संस्कृति' (नृशास्त्रा और मनोविज्ञान में) और 'पार-राष्ट्रीय' (राजनीति विज्ञान और समाजशास्त्रा में) कहा जाता है जो निश्चित रूप से विभिन्न अध्ययन क्षेत्रों पर बल देती है।

बोध प्रश्न 2

नोट : i) नीचे दिए गए स्थान में अपना उत्तर लिखिए।

ii) इकाई के अंत में दिए उत्तरों से अपने उत्तरों का मिलान कीजिए।

1) प्रविधि क्या है ? अनुसंधान के लिए प्रविधि क्यों महत्वपूर्ण है ?

.....

.....

.....

.....

2.3 तुलनात्मक प्रविधि: तुलना क्यों

2.3.1 सामाजिक वैज्ञानिक अनुसंधान

'आधारभूत सिद्धांत' का विकास करने के लिए, अनुमान को जांचने के लिए, कार्य-कारण संबंध स्थापित करने के लिए और विश्वसनीय समान्यीकरण करने के लिए तुलनात्मक प्रविधि के जरिए समानताओं और असमानताओं का अध्ययन किया जाता है। कई समाज वैज्ञानिकों का यह मानना है कि अनुसंधान वैज्ञानिक रूप से सुव्यवस्थित होना चाहिए। उनका मानना है कि तुलनात्मक प्रविधि से 'वैज्ञानिक' अनुसंधान की दिशा में मदद मिलती है। इस प्रकार के अनुसंधान में सुस्पष्टता, वैद्यता, विश्वसनीयता होती है और इसका परीक्षण भी किया जा सकता है तथा इसके आधार पर इसमें कुछ हद तक अनुमान भी किया जा सकता है। उदाहरण के लिए अमेरिका के राजनीतिक वैज्ञानिक जेम्स कौल मेन हमेशा अपने विद्यार्थियों को यह कहते थे कि 'तुलना किए बगैर तुम वैज्ञानिक प्रविधि नहीं अपना सकते हो'। इसी प्रकार स्वान्सन का मानना है कि बिना तुलना के ' वैज्ञानिक सोच और वैज्ञानिक अनुसंधान' के बारे में सोचा भी नहीं जा सकता है। (*गी ई स्वान्सन, 'फ्रेमवर्क्स फॉर कम्परेटिव रिसर्च: इस्ट्रक्चरल ऐंथ्रोपॉलोजी ऐंड द थ्योरी ऑफ ऐक्शन,* इवान वैलियर, संपादन, कम्परेटिव मेथड्स इन सोशिओलॉजी, बर्केले, 1971, पृ.145)।

एक ओर जहां भौतिक विज्ञान में सावधानीपूर्वक नियंत्रित परिवेश में, प्रयोगशाला में तुलना की जा सकती है वहीं सामाजिक विज्ञान में प्रयोगशाला में इस प्रकार का नियंत्रित और सटीक प्रयोग करना संभव नहीं है। उदाहरण के लिए यदि कोई सामाजिक वैज्ञानिक चुनाव व्यवस्थाओं और राजनैतिक दलों की संख्या के संबंध का अध्ययन करना चाहता है तो वह न तो सरकार को चुनाव व्यवस्था बदलने का आदेश दे सकता है और न ही अपने पूर्वानुमान को जांचने के लिए जनता को एक खास तरीके से व्यवहार करने का आदेश दे सकता है। इसके अलावा वह प्रयोगशाला में किसी सामाजिक या राजनीतिक परिघटना का निर्माण नहीं कर सकता जिसकी जांच करनी होती है। अत: जहां एक

ओर सामाजिक वैज्ञानिक तरीके से काम करने के लिए बाध्य हो सकता है वहीं सामाजिक परिघटनाएं उसकी ' वैज्ञानिक' जांच पड़ताल में बाधाएं उत्पन्न करती हैं। इसलिए वह समाज में उपस्थित विभिन्न मुद्दों, मामलों और मसलों का व्यावहारिक अध्ययन कर सकता है। उदाहरण के लिए – वह मौजूदा राजनीतिक व्यवस्थाओं का अध्ययन करते हुए अपनी तुलना कर सकता है। पूर्वानुमान करने, निष्कर्ष प्रस्तुत करने और सामान्यीकरण के लिए उनके संबंधों का अध्ययन करना आवश्यक है। हालांकि तुलनात्मक प्रविधि प्रयोगात्मक प्रविधि से वैज्ञानिक दृष्टि से कमजोर होती है परंतु इसे वैज्ञानिक प्रविधि के सबसे करीब माना जाता है जिसके जरिए सामाजिक परिघटनाओं की सर्वाधिक सटीक व्याख्या की जा सकती है, सिद्धांत बनाए जा सकते हैं और सामान्यीकरण प्रस्तुत किया जा सकता है। अब आपके मन में सवाल उठ रहा होगा कि तुलनात्मक प्रविधि किस प्रकार वैज्ञानिक है। सातोरी का मानना है कि 'नियंत्रित कार्य' के नियंत्रण की व्यवस्था जो वैज्ञानिक अनुसंधान और प्रयोगशाला में होनेवाले प्रयोग का अनिवार्य हिस्सा है कि प्राप्ति सामाजिक विज्ञान में केवल तुलना के द्वारा ही की जा सकती है। उनका यह भी मानना है कि चूंकि तुलनात्मक अध्ययन के द्वारा ही नियंत्रित कार्य किया जा सकता है अत: सामाजिक विज्ञान में यह अवांछनीय है। सैद्धांतिक विचारों की वैधता को नियंत्रित करने या जांचने के अपने कार्य के कारण सामान्यीकरण करने या किसी परिघटना के सैद्धांतिक पक्ष पर विचार करने, पूर्वानुमान करने और उनके अनुसार 'दूसरों के अनुभवों से सीखने' के अपने गुण के कारण तुलनाओं का स्वरूप वैज्ञानिक हो जाता है। इसी संदर्भ में यह बताना आवश्यक है कि तुलनात्मक प्रविधि में जो पूर्वानुमान किया जाता है और जो कार्यकारण संबंध स्थापित किया जाता है उसमें केवल एक संभावना निहित होती है। कहने का तात्पर्य यह है कि विभिन्न संभावनाओं या आगे होनेवाली घटनाओं के अनुमान के आधार पर ही यह अपनी बात कह सकता है। यह बता सकता है कि एक खास परिवेश में काम होने जा रहा है जिसका परिणाम यह हो सकता है। वैज्ञानिक अनुसंधान में जो कार्यकारण संबंध स्थापित किया जाता है, उसमें एक निश्चितता होती है। उसमें यह कहा जा सकता है कि अमुक परिवेश में अमुक परिणाम सामने आएगा।

2.3.2 समन्वित सोच

समन्वित सोच विचार या संबंधों और सम्पर्कों की खोज: अभी हमने अध्ययन करते हुए यह पाया कि कुछ सामाजिक वैज्ञानिक वैज्ञानिक जांच विकसित करने के लिए तुलनात्मक जांच की प्रविधि अपनाते हैं। हालांकि दूसरों के लिए 'तुलना के आधार पर सोचना' किसी खास सामाजिक राजनीतिक परिघटना के विश्लेषण का अनिवार्य हिस्सा है। उदाहरण के लिए स्वान्सन का मानना है कि "तुलना के अभाव में सोच विचार किया ही नहीं जा सकता। उनका मानना है कि किसी को इस बात से आश्चर्य नहीं होना चाहिए कि किसी भी सामाजिक वैज्ञानिक के कार्य में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष तुलना मौजूद होती है और यह आरंभ से ही ऐसा होता आया है: मसलन भूमिकाओं, संगठनों, समुदायों, संस्थाओं, समाजों, और संस्कृतियों की तुलना।'' (स्वान्सन, 1971, पृ. 145) प्रसिद्ध जर्मन समाजशास्त्री **एमेल डर्खिम** भी यह मानते हैं कि तुलनात्मक अध्ययन से (समाजशास्त्रीय) अनुसंधान 'विवरणात्मक होने से बच जाता है।' (एमेल डर्खिम, *द डिविजन ऑफ लेबर इन सोसाइटी*, 1949, पृ.139) **स्मेलसर** का मानना है कि बिना तुलना के वर्णन नहीं किया जा सकता। इसे उदाहरण के द्वारा पुष्ट करते हुए कहते हैं कि 'घनी आबादी' और 'जनतांत्रिक' जैसे शब्द भी एक ऐसी सामान्य स्थितियों की ओर इशारा करते है जो कमोबेश आबादी वाला प्रदेश हो या कमोबेश जनतांत्रिक हो, पर ऐसी स्थिति का वर्णन दूसरों से तुलना करके ही किया जा सकता है (नील जे. स्मेलसर, *कम्परेटिव मेथड्स इन द सोशल साइंसेज, इंगलवुड*, 1976, पृ.3। कुछ विद्वानों का मानना है कि इसमें सामान्य का पूर्वानुमान, कल्पना, और तुलना की जाती है; इससे विश्लेषण में मदद मिलती है। इसीलिए **मनोरंजन मोहंती** किसी परिघटना की समानताओं और असमानताओं को देखने के बजाए संबंधों पर

या ध्रुवीकरण हो सकता है। दूसरे शब्दों में इस प्रकार के प्रयास से अलग-अलग वर्गों में एक प्रकार के समूहों को डाल दिया जाएगा और तुलनात्मक प्रयास समूहों की समानताओं और असमानताओं तक ही सीमित रह जाएगा। एकता और विरोधों के संबंधों की पहचान के लिए प्रश्न भी अलग ढंग के पूछे जाने चाहिए। इसका मतलब यह हुआ कि प्रश्न इस प्रकार के नहीं होने चाहिए कि जिनका उत्तर समानताएं और असमानताएं बताने में निहित हो बल्कि 'वह उनके बीच के संबंध को उजागर करता हो।' तभी संयुक्त राज्य अमेरिका और यूनाइटेड किंगडम की राजनैतिक व्यवस्थाओं की तुलना की जा सकती है जहां अलग-अलग प्रकार की सरकारें हैं (राष्ट्रपति और संसदीय रूप)।

स्मेल्सर ने भी समानता और असमानता की बजाए संबंधों पर बल दिया है। स्मेल्सर का मानना है कि यहां तक कि एक तुलनात्मक प्रयास में भी 'असमानताओं' या मतभेद का कारण प्रस्तुत किया जाता है और इसकी व्याख्या की जाती है जो अक्सर 'तोड़ा मरोड़ा रहता' है। दूसरे शब्दों में मनुष्य का यह स्वभाव है कि दूसरों से कुछ अलग सी चीज जो 'नई' और अनूठी' हो, के साथ उसका लगाव या खिंचाव बढ़ जाता है। ऐतिहासिक रूप से यह प्रवृत्ति पाई जाती है कि इनकी प्रशंसा पुराने युग के 'शुद्ध' अवशेषों के रूप में की जाती है या सामान्य व्यवहार से विचलन के रूप में इसे देखा जाता है। इस प्रकार समानताओं और असमानताओं पर बल देने से समानताओं या एकरूपताओं को मानदंड के रूप में और असमानताओं और विविधताओं को मानदंड से 'विचलन' के रूप में देखा जा सकता है। इस प्रकार के विचलनों के लिए की गई व्याख्या न केवल 'तोड़ी मरोड़ी' हो सकती है बल्कि इस प्रकार के वर्गीकरण में अच्छे या बुरे आदर्श और पथभ्रष्ट या दो विपरीत वर्गों या पदानुक्रम में विभाजन कर दिया जाता है। अक्सर जहां संबंध असमान होते हैं वहां असमानता और उसके कारण को इस प्रकार पेश किया जाता है कि अलग दिखने वाले समूह से ताकत छीनने और उन्हें कमजोर बनाने के समर्थन में तर्क प्रस्तुत किए जाते हैं। उपनिवेशवाद के इतिहास को देखने से पता चलता है कि गुलाम देशों से आजादी और खुद सरकार चलाने का अधिकार छीन लिया गया। साम्राज्यवादी राष्ट्रों ने उनसे सत्ता छीने जाने का यह कहकर समर्थन किया और इसे जायज ठहराया कि अपनी सामाजिक संरचना और धार्मिक विश्वासों के कारण वहां की जनता खुद शासन नहीं चला सकती। यहां सत्ता ने अपने आप यह व्याख्या कर ली और अन्तर स्थापित कर दिया। इन परिस्थितियों में पश्चिम और पूर्व का अन्तर दिखाने और विभाजित करने से ऐसे देशों और लोगों की चर्चा सामने आएगी जो एक ही समय में अलग-अलग परिस्थितियों में जी रहे हैं। एक ओर साम्राज्यवादी ब्रिटिश आधुनिकीकृत हो रहे हैं और उसी समय भारत की गुलाम जनता को अपने समय से पीछे धकेला जा रहा था। एरिक वोल्फ के अनुसार हम ऐसे विश्व में जी रहे हैं जिसमें 'अन्त: संबंध' प्रमुख हैं। इसलिए एरिक वोल्फ ने संबंधों के महत्व पर बल दिया है और उन्होंने इस धारणा को सुधारा है कि ऐतिहासिक दृष्टि से राष्ट्रों की नियति को यूरोपीय राष्ट्रों ने निर्मित किया है जबकि दूसरे राष्ट्र मूक दर्शक बने रहे हैं। वोल्फ का मानना है कि ऐतिहासिक दृष्टि से राज्यों और राष्ट्रों के बीच अन्त: संबंध रहा है और वह अब भी मौजूद है। (**एरिक वोल्फ**, *यूरोप ऐंड द पिपुल विदाउट हिस्ट्री*, कैलिफ्रोनिया, 1982)। इसका तात्पर्य यह हुआ कि संबंधों की खोज करना न केवल संभव है, इस प्रकार के अन्त: संबंधों को नजर अंदाज करना ऐतिहासिक दृष्टि से गलत भी है।

बोध प्रश्न 2

नोट : i) नीचे दिए गए स्थान में अपना उत्तर लिखिए।

ii) इकाई के अंत में दिए उत्तरों से अपने उत्तरों का मिलान कीजिए।

1) सामाजिक- वैज्ञानिक अनुसंधान के उद्देश्य में तुलना किस प्रकार सहायक है ?

.....

.....

.....

.....

2) तुलनात्मक प्रविधि का उद्देश्य द्विभाजन की अपेक्षा संबंधों की खोज है। इस कथन को विस्तार से समझाइए।

.....

.....

.....

.....

2.4 तुलना की प्रविधियां

सामाजिक विज्ञान में तुलना की अनेक प्रविधियां अपनाई जाती हैं।

2.4.1 प्रयोगात्मक प्रविधि

प्रयोगात्मक प्रविधि : हालांकि समाज विज्ञान में प्रयोगात्मक प्रविधि का कम ही उपयोग किया जाता है परंतु इससे एक ऐसा प्रारूप तैयार होता है जिसके आधार पर तुलनावादी अपना अध्ययन करना चाहते हैं। साधारण शब्दों में प्रयोगात्मक प्रविधि दो परिस्थितियों के बीच कार्यकारण संबंध स्थापित करती है। दूसरे शब्दों में प्रयोग का उद्देश्य यह स्थापित करना होता है कि एक परिस्थिति से दूसरी का जन्म होता है या एक खास तरीके से वह दूसरे को प्रभावित करता है। उदाहरण के लिए यदि कोई इस बात का अध्ययन या व्याख्या करना चाहता है कि बच्चे अलग-अलग ढंग से अंग्रेजी क्यों बोलते हैं तो उनकी क्षमता को प्रभावित करने वाले कई कारकों जैसे सामाजिक पृष्ठभूमि, भाषा सीखने की क्षमता, आसपास के परिवेश की खोज करनी होगी। अध्ययन करने वाला व्यक्ति इन सभी कारकों या इनमें से किसी एक या कुछ कारकों का अध्ययन कर सकता है। वह प्रभावित करने वाले अलग-अलग कारणों का भी अध्ययन कर सकता है और वह प्रत्येक परिस्थिति की भूमिका पर खास तौर से विचार कर सकता है। जिस परिस्थिति के प्रभाव का मूल्यांकन और व्याख्या अध्ययनकर्ता करता है वह अकेला प्रभावकारी तत्व होता है जैसे सामाजिक पृष्ठभूमि आदि। जिस परिस्थिति पर उसका प्रभाव पड़ता है वह निर्भर कारक होता है। अत: अध्ययन इस प्रकार किया जाता है कि भाषा की अभिव्यक्ति पर सामाजिक पृष्ठभूमि के प्रभाव का अध्ययन करने के लिए किए गए प्रयोग में सामाजिक पृष्ठभूमि स्वतंत्र कारक और अभिव्यक्ति की क्षमता निर्भर कारक होता है। अध्ययनकर्ता इन दोनों परिस्थितियों के बीच के संबंध के आधार पर एक पूर्वानुमान करता है जिसकी जांच की जाती है। मसलन उच्च सामाजिक, आर्थिक पृष्ठभूमि से आनेवाले बच्चे अच्छी अंग्रेजी समझ और बोल सकते हैं। इस प्रयोग के परिणाम के आधार पर अध्ययनकर्ता अपनी खोज का सामान्य निष्कर्ष प्रस्तुत कर सकता है और उसकी तुलना पूर्व किए गए अध्ययनों से कर सकता है।

2.4.2 उदाहरणों का अध्ययन (केस स्टडी)

केस स्टडी या किसी मामले के अध्ययन में किसी एक केस या मामले का अध्ययन किया जाता है। हालांकि यह प्रविधि तुलनात्मक नहीं होती हैं परंतु यह कुछ आंकड़े जरूर प्रस्तुत करती है जिसे सामान्य पर्यवेक्षण का आधार बनाया जा सकता है। इन पर्यवेक्षणों के आधार पर दूसरे 'मामलों' से इसकी तुलना की जा सकती है और सामान्य व्याख्या प्रस्तुत की जा सकती है। इन मामलों के अध्ययन के द्वारा अलग-अलग ढंग से 'विशिष्टता' या 'विचलन' या 'असामान्य' मामले सामने आ

सकते हैं। उदाहरण के लिए तुलनावादियों में एक प्रवृत्ति यह हो सकती है कि वे इस प्रश्न की बजाए कि स्वेडन के साथ अनेक पश्चिमी देशों में समाजवादी पार्टी है की खोज करने की अपेक्षा इस प्रकार के प्रश्न की पड़ताल करें कि संयुक्त राज्य अमेरिका में समाजवादी पार्टी क्यों नहीं है।

यहां हम संक्षेप में एलेक्सिस डे टॉकेविले के 18वीं शताब्दी के फ्रांस (द ओल्ड रेजिम ऐंड द फ्रेंच रेवैल्यूशन, 1856) और 19वीं शताब्दी के संयुक्त राज्य (डेमोक्रेसी इन अमेरिका: वाल्यूम I,) 1835 वाल्यूम II, 1840) के क्लासिकल अध्ययनों में यह दिखाने का प्रयास करेंगे कि किस प्रकार किसी एक मामले को केंद्रित कर तुलनात्मक व्याख्या प्रस्तुत की जा सकती है। परंतु उनके अध्ययनों में अलग-अलग प्रश्न पूछे जा सकते हैं। फ्रांसीसी मामले में यह व्याख्या करने का प्रयास किया गया है कि 1789 की फ्रांसीसी क्रांति क्यों हुई ? अमेरिकी मामले में अमेरिका में सामाजिक समानता की परिस्थितियों के कारणों और परिणामों का अध्ययन किया गया है। हालांकि इन दोनों पुस्तकों में 20 वर्षों का अन्तर है परंतु विषय में समानता है। यह समानता अंशत: टॉकेविले के कुछ दृष्टिकोणों के कारण है। समानता और असमानता, तानाशाही और आजादी, राजनैतिक स्थायित्व और अस्थायित्व, तथा सामाजिक संरचना और बदलाव संबंधी उनके विचार के कारण इन दोनों अध्ययनों में एक समानता है। कुछ लोगों का मानना है कि उनकी ये दोनों पुस्तकें तुलनात्मक अध्ययन का एक उदाहरण है और कुछ लोगों का मानना है कि एक तुलनात्मक अध्ययन है क्योंकि इन दोनों अध्ययनों में अप्रत्यक्ष रूप से या संदर्भ के रूप में दूसरे देशों की चर्चा हुई है। अत: अमेरिकी समाज का उनका विश्लेषण फ्रांसीसी समाज संबंधी उनके दृष्टिकोण से प्रभावित है और फ्रांसीसी समाज के अध्ययन पर अमेरिकी समाज संबंधी उनका अध्ययन हावी है। अमेरिकी मामले का अध्ययन करते समय यह बात सामने आई कि अमेरिका 'जन्म से ही जनतंत्र' है। वहां का समाज लगभग पूरी समानता प्राप्त कर चुका है जिसके परिणामस्वरूप एक राजनैतिक स्थायित्व कायम हो चुका है। यहां के बड़े मध्यवर्ग में अभाव का कोई भाव नहीं है और बदलाव के प्रति उनका रवैया संकीर्ण है। फ्रांसीसी मामले में एक अभिजात तंत्र (पदानुक्रम असमानताओं की एक व्यवस्था) का अध्ययन किया गया है जो 18वीं शताब्दी में संक्रमणकालीन चरण में प्रवेश कर गया था। समाज में असमानता थी परंतु लोग समानता चाहते थे और इसके परिणामस्वरूप अभिजात तंत्र और समानता के दो सिद्धांतों में टकराव हुआ। इसके परिणामस्वरूप तानाशाही की स्थापना हुई और उसके बाद अन्तत: 1789 की क्रांति हुई। इस प्रकार टॉकेविले ने अलग-अलग मामलों का अध्ययन किया परंतु वस्तुत: उसमें राष्ट्रीय वैषम्य और समानताओं को भी शामिल किया गया। फ्रांस और अमेरिका में जो ऐतिहासिक परिवर्तन हुए और जिन ऐतिहासिक ताकतों ने उसमें सहयोग दिया उसकी व्याख्या करने के लिए इसका इस्तेमाल हुआ।

2.4.3 सांख्यिकी प्रविधि

सांख्यिकी प्रविधि में संख्या का उपयोग किया जाता है। इसमें मापे जा सकने वाले और परिवर्तनीय कारकों का उपयोग किया जाता है। उदाहरणस्वरूप मत डालने के रुझान, सार्वजनिक खर्च, राजनीतिक दल, मत देनेवाले मतदाता, शहरीकरण, जनसंख्या वृद्धि जैसी कोटियों और कारकों का संख्या आधारित अध्ययन किया जाता है। इसके द्वारा कई परिवर्तनीय कारकों और उनके संबंधों का एक साथ अध्ययन किया जा सकता है। इसमें ठोस, स्पष्ट और सटीक आंकड़े प्रस्तुत किए जाते हैं ताकि संख्या दिखाकर असमानताएं और समानताएं दिखाई जा सकें। परिवर्तनीय कारकों का एक साथ अध्ययन करने से संबंधों की व्याख्या करना आसान हो जाता है। सांख्यिकी प्रविधि के इस्तेमाल से लंबी अवधि की प्रवृत्तियों और पद्धतियों की तुलना और व्याख्या करने तथा भविष्यवाणी करने में मदद मिलती है। उदाहरण के लिए मतदाताओं के मत देने की उपस्थिति संख्या और आयु वर्गों की सांख्यिकी तालिका का विश्लेषण या उम्र और राजनैतिक भागीदारी के संबंध की व्याख्या की जा सकती है। लंबी अवधि में प्राप्त आंकड़ों की तुलना की जा सकती है या अन्य देशों/राजनैतिक व्यवस्था

के तहत इसी प्रकार के आंकड़ों का मिलान किया जा सकता है। धार्मिक समूहों, सामाजिक वर्ग और उम्र के आधार पर मतदाताओं को वर्गीकृत किया जा सकता है। इसके आधार पर यह जटिल सामान्यीकरण किया जा सकता है कि मध्य वर्ग, हिंदू के पुरुष मतदाताओं में 25 और 30 वर्ष के मतदाता अधिक सक्रिय हैं। दूसरे राष्ट्रों से तुलना कर इस प्रकार का निष्कर्ष प्राप्त किया जा सकता है। 25 से 30 वर्ष का मध्यवर्गीय महिला मतदाता भारत जैसे विकासशील देशों की अपेक्षा पश्चिमी देशों में अधिक सक्रिय है। इस प्रकार की विधि का यह फायदा है कि इसमें अनेक परिवर्तनीय कारकों को समेटा जा सकता है। इससे संबंधों की बृहद व्याख्या हो सकेगी। संबंधों और बड़े वर्गीकरणों की व्याख्या हो सकेगी जिसका उपयोग संख्या बताने के लिए जा सकता है।

2.4.4 विषय केंद्रित तुलना

इस प्रकार के अध्ययनों में थोड़े देशों पर ध्यान केंद्रित किया जाता है। इसमें अक्सर दो देशों के किसी खास पक्ष पर ध्यान केंद्रित किया जाता है। दो देशों के सभी पक्षों पर विचार करने के बजाए उनकी राजनीति की तुलना की जाती है। इस विधि के द्वारा विभिन्न देशों में मौजूद सार्वजनिक नीतियों का सफलतापूर्वक तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। लिपसेट ने दो प्रकार के दोहरे और युगमित (जोड़ी) तुलना का अन्तर बताया है - अस्पष्ट और सुस्पष्ट। अस्पष्ट दोहरी तुलना में अध्ययनकर्ता का अपना देश संदर्भ का काम कर सकता है। मसलन डे टॉकेविले द्वारा अमेरिका का अध्ययन इसका उदाहरण है। सुस्पष्ट तुलना में दो देशों की तुलना की जाती है। किसी खास पक्ष को लेकर जैसे भारत और चीन में जनसंख्या नियंत्रण की नीति या उनकी समग्रता में जैसे आधुनिकीकरण की प्रक्रिया के संदर्भ में दो देशों का अध्ययन किया जा सकता है। हालांकि इससे दो देशों का समानांतर अध्ययन तो हो सकता है पर इसमें संबंधों के अध्ययन की गुंजाइश कम है।

2.4.5 ऐतिहासिक प्रविधि

ऐतिहासिक प्रविधि दूसरी प्रविधियों से इस मामले में अलग है कि इसमें कारण कार्य व्याख्या पर बल दिया जाता है जो ऐतिहासिक रूप से महत्वपूर्ण होता है। ऐरिक वोल्फ का मानना है कि किसी समाज को समझने और मनुष्य के कार्य व्यापारों के कारणों की खोज करना तकनीक अध्ययनों से नहीं हो सकता और उनकी समस्याओं का समाधान भी तकनीकी शब्दावली में नही किया जा सकता। विश्लेषणात्मक इतिहास द्वारा हम आज की समस्याओं के कारणों की खोज अतीत में कर सकते हैं। किसी एक संस्कृति या राष्ट्र, एक सांस्कृतिक क्षेत्र या किसी खास समय में एक महादेश का अध्ययन करने से विश्लेषणात्मक इतिहास का विकास नहीं किया जा सकता बल्कि इसके लिए मानव जन संख्याओं और संस्कृतियों के सम्पर्कों तथा अन्तर्संबंधों के अध्ययन की जरूरत होती है। मनुष्यों का यह संसार जटिल है और इसके कई स्तर हैं। इसमें अनेक प्रक्रियाएं एक दूसरे से जुड़ी हुई हैं जो इसकी सम्पूर्ण तस्वीर पेश करती हैं। इन्हें अलग-अलग टुकड़ों में देखने का प्रयास करने और फिर इन्हें एक साथ जोड़ने के असफल प्रयास से वास्तविक चित्र सामने नहीं आ पाता।

ऐतिहासिक अध्ययनों में ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में सामाजिक और राजनीतिक परिघटना की व्याख्या करने के लिए एक या उससे अधिक मामलों पर ध्यान केंद्रित किया जाता है। जैसा कि हम पहले बता चुके हैं, एक मात्र मामले के अध्ययन से सामान्य वक्तव्य बनता है जिसे अन्य मामलों पर भी परखा जा सकता है। थेडा स्कॉपोल का मानना है कि एक या उससे अधिक मामलों का अध्ययन करने वाले तुलनात्मक ऐतिहासिक अध्ययनों को मोटे तौर पर दो वर्गों में विभाजित किया जा सकता है: 'तुलनात्मक इतिहास' और 'तुलनात्मक ऐतिहासिक विश्लेषण'। किसी भी राष्ट्र राज्यों, संस्थाओं या सभ्यताओं, किसी भी दो या दो से अधिक ऐतिहासिक पहलुओं की जब चर्चा की जाती है तो इसे आमतौर पर तुलनात्मक इतिहास कह दिया जाता है। **चार्ल्स लुइस और रिचर्ड टिल्जि** के '*द रिवेलियस सेंचुरी* (1830-1930) जैसी पुस्तकों में इसी प्रकार का अध्ययन किया गया है जिसमें

एक ऐसा विशिष्ट ऐतिहासिक प्रारूप बनाने का प्रयास किया गया है जो अलग-अलग राष्ट्रीय संदर्भों में उपयुक्त हो। इसके अलावा **रेनहार्ड बेन्डिक्स** के *'नेशनल बिल्डिंग और सिटिजनशिप'* तथा **पेरी एन्डरसन्स** के *'लिनियज ऑफ द एबसोल्यिूस्ट स्टेट'* जैसी पुस्तकों में राष्ट्रों और सभ्यताओं का वैषम्य दिखाने के लिए तुलना की गई है। **स्कॉपोल** दूसरी प्रविधि अर्थात तुलनात्मक ऐतिहासिक विश्लेषण अपनाती हैं जिसका उद्देश्य प्रमुखत: 'राष्ट्र-राज्यों जैसी बड़ी इकाइयों से जुड़ी घटनाओं या संरचनात्मक बनावट के संबध में एक पूर्व कल्पना का विकास, परीक्षण, कारणों की खोज और व्याख्या करना होता है।' 'इसके लिए तुलना की इकाइयों के रूप में राष्ट्रीय ऐतिहासिक प्रवृत्तियों का चयन किया जाता है।' खास परिघटना (मसलन क्रांतियों) के कारणों की खोज करने और सामान्य निष्कर्ष निकालने के लिए ऐसा किया जाता है। किसी परिघटना के कारणों की खोज और कार्यकारण संबंधों की व्याख्या दो तरीकों से की जाती है। **जॉन स्टुअर्ट मिल** ने अपनी पुस्तक *'ए सिस्टम ऑफ लॉजिक'* में इन विधियों की चर्चा करते हुए दो विधियों का उल्लेख किया है–क) सहमति की प्रविधि, ख) असहमति की प्रविधि। सहमति की प्रविधि में एक समान परिघटनाओं वाले मामलों का एक साथ अध्ययन किया जाता है और कारणों की खोज की जाती है। स्कॉक पॉल ने असहमति की प्रविधि अपनाई है। इसमें दो तरह के मामले लिए जाते हैं– क) सकारात्मक मामले–जिसमें परिघटना और पूर्वानुमानित कारणात्मक संबंध उपस्थित होते हैं और ख) नकारात्मक मामले – जिसमें परिघटना के साथ कारण भी अनुपस्थित रहते हैं। परंतु अन्य मामलों में वे सकारात्मक मामलों के समान ही होते हैं। स्टेट ऐंड सोशल रेवलूशन, *'ए कम्परेटिव एनालिसिस ऑफ फ्रांस, रशिया ऐंड चीन'*, (कैम्ब्रीज, 1979) में उन्होंने फ्रांस, रूस और चीनी क्रांति का तुलनात्मक विश्लेषण किया है। तुलनात्मक विश्लेषण करते हुए स्कॉक पॉल ने इन तीनों को सफल सामाजिक क्रांति के सकारात्मक मामलों के रूप में लिया है और उनका मानना है कि इनमें अनेक असमानताओं के बावजूद इनके कारणों में काफी समानता है। उन्होंने कई नकारात्मक मामले भी लिए हैं जैसे 1905 की असफल रूसी क्रांति। इसके अलावा उन्होंने इंगलिश, जापानी और जर्मन इतिहास के कुछ मुद्दों की भी चर्चा की है। पहले मामले में कारणात्मक संबंधी अपने तर्क को पुष्ट करने के लिए इस प्रकार का अध्ययन किया गया है।

ऐतिहासिक प्रविधि के आलोचकों का मानना है कि इसमें ज्यादा मामलों का अध्ययन नहीं हो पाता इसलिए इसमें किसी खास परिघटना का वैज्ञानिक अध्ययन नहीं हो पाता है। उदाहरण के लिए हैरी एक्सटिन का मनना है कि "कम मामलों के अध्ययन पर आधारित सामान्यीकरण केवल तकनीक रूप से ही सामान्यीकरण होगा।" सामान्यीकरण के लिए ऐसी प्रविधि अपनानी चाहिए जिसमें ज्यादा से ज्यादा मामलों का कड़ा परीक्षण किया जा सके। जैसा कि सांख्यिकी विश्लेषण में किया जाता है। (**हैरी एक्सटिन**, *इन्टरनल वार*, 1964)

बोध प्रश्न 3

नोट : i) नीचे दिए गए स्थान में अपना उत्तर लिखिए।

ii) इकाई के अंत में दिए उत्तरों से अपने उत्तरों का मिलान कीजिए।

1) प्रयोगात्मक प्रविधि से आप क्या समझते हैं ? तुलनात्मक ढांचे में राजनैतिक परिघटना के अध्ययन के लिए यह प्रविधि कितनी उपयुक्त है ?

.....

.....

.....

.....

.....

2) सांख्यिकी प्रविधि का उपयोग करते हुए तुलनात्मक राजनीति की समस्या का प्रारूप बनाइए।

.....

.....

.....

.....

2.5 सारांश

राजनैतिक और सामाजिक परिघटना को समझने और व्याख्यायित करने के लिए तुलना जरूरी है। तुलनात्मक प्रविधि अपनाने से हम केवल विवरण तक ही सीमित नहीं रहते बल्कि इसमें राजनैतिक और सामाजिक प्रक्रियाओं की व्याख्या की जाती है और इन व्याख्यायों के आधार पर सामान्य सिद्धांतों और पूर्वानुमानों का निर्माण होता है। इसमें हमें सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक परिघटनाओं के सम्पर्क सूत्रों और अन्त: संबंधों का पता चलता है जिससे हमें अपने परिवेश की बदलती प्रकृति की बेहतर जानकारी हो पाती है।

बोध प्रश्न 4

नोट : i) नीचे दिए गए स्थान में अपना उत्तर लिखिए।

ii) इकाई के अंत में दिए उत्तरों से अपने उत्तरों का मिलान कीजिए।

1) तुलना की विभिन्न प्रविधियां क्या हैं ? तुलनात्मक राजनीति के अध्ययन में इनका सापेक्षिक महत्व क्या है ?

.....

.....

.....

.....

2) क्या बिना ऐतिहासिक दृष्टिकोण के तुलना की जा सकती है ? इस वक्तव्य के आलोक में ऐतिहासिक प्रविधि की खूबियां और कमियां बताइए।

.....

.....

.....

.....

3) तुलनात्मक अध्ययन से समन्वित सोच में मदद मिलती है। टिप्पणी कीजिए।

.....

.....

.....

.....

2.6 शब्दावली

नियंत्रण : नियमन या नियंत्रण प्रयोग का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है जहां एक समानांतर प्रयोग या विषयों का समूह (नियंत्रण समूह) स्थापित किया जाता है ताकि दूसरे प्रयोगों के लिए तुलना का मानदंड स्थापित किया जा सके। सीखने की प्रक्रिया में दृश्य माध्यमों के प्रभाव का अध्ययन करने के लिए किए जाने वाले प्रयोग में जिस दृश्य माध्यम के प्रभाव का अध्ययन किया जाना है उसका नियंत्रण समूह नहीं बनाया जाएगा। कार्य कारण व्याख्या : इसके अनुसार एक तथ्य दूसरे तथ्यों को जन्म देता है उदाहरण स्वरूप जरूरत से ज्यादा जनसंख्या होने पर घर की समस्या पैदा हो सकती है।

संभाव्य कार्य कारण संबंध : संभाव्य कार्य कारण संबंध उसे कहते हैं जिसके परिणाम और पूर्वानुमान में संभावना व्यक्त की जाती है; जैसे – अमुक परिस्थितियों का अमुक परिणाम होगा।

निश्चयात्मक कार्य कारण संबंध : निश्चयात्मक कार्य कारण संबंध में यह कहा जाता है कि एक निश्चित परिस्थितियों का एक निश्चित परिणाम होगा। इस प्रकार इसमें एक निश्चितता होती है और इसका उपयोग वैज्ञानिक अनुसंधान के लिए किया जाता है।

सामान्यीकरण : एक ऐसा आम वक्तव्य जो कई मामलों पर लागू होता हो। यह आधारभूत सिद्धांत किसी खास घटनाओं की व्याख्या के लिए एक ढांचा प्रदान करता है या इसमें व्याख्या परक सिद्धांत और विचार होते हैं जिन्हें सुव्यवस्थित अध्ययन और तथ्यों के पर्यवेक्षण द्वारा प्राप्त किया जाता है।

अनुमान : यह एक ऐसा वक्तव्य है जो किसी खास परिस्थिति के अन्तर्गत सत्य होता है ; जैसे यह कहना कि जनसंख्या के बढ़ने से खेतों का आकार छोटा होगा।

प्रविधि : प्रविधि आंकड़ों को लागू करने के लिए सिद्धांतों को सुव्यवस्थित करने का एक तरीका है जिसे 'अवधारणात्मक योजनाएं' भी कहते हैं, तुलनात्मक (एक से अधिक मामलों के लिए), समरूप (केवल एक मामले के अध्ययन के लिए), ऐतिहासिक (समय और अनुक्रम का उपयोग करते हुए) कुछ प्रविधियां हैं। प्रवधि 'सोच के बारें मे सोच' है। प्रारूप : प्रकार और प्रारूप एक दूसरे के पर्याय है। अलग-अलग बिखरते तथ्यों को सुव्यवस्थित रूप में प्रस्तुत करने का यह एक बौद्धिक प्रयास है।

सुनिश्चित : जो बिलकुल निश्चित है।

भविष्यवाणी : जिसके होने का पूर्वानुमान लगाया जा सके।

विश्वसनीयता : साख का परीक्षण–उदाहरणस्वरूप किसी परीक्षण की विश्वसनीयता तब पुष्ट होती है जब यह हमेशा खास परिस्थितियों में एक ही परिणाम देता है।

तकनीक : तकनीक प्रविधि को प्रासंगिक आंकड़े से जोड़ता है। उपयुक्तता, नमूना बनाने, साक्षात्कारों आदि में तकनीक बदलती रहती है।

सैद्धांतिक वक्तव्य : दो परिवर्तनशील कारकों के बीच के संबंध को पुष्ट करने या इनकार करने संबंधी वक्तव्य (सामान्यीकरण की तरह) को सैद्धांतिक कथन कहते हैं। इस प्रकार के वक्तव्य को सभी जगह लागू किया जा सकता है।

वैधता : यह भी विश्वसनीयता की जांच है जिसमें विश्वसनीयता या उपयुक्तता की जांच की जाती है– उदाहरण के लिए दबाव के अन्तर का अध्ययन करने के लिए किए गए प्रयोग की वैधता की जांच तभी होगी जब अध्ययन किए गए आंकड़े दबाव के अन्तर को बताएंगे न कि तापमान के अन्तर को।

परिवर्तनीय कारक : यह परिवर्तनशील होता है। प्रयोग करने वाला प्रयोग के दौरान विभिन्न कारकों का उपयोग करता है। परिवर्तनीय कारक कई प्रकार के होते हैं: क) स्वतंत्र परिवर्तनीय कारक या प्रयोग के परिणाम के रूप में, ख) निर्भर कारक, ग) हस्तक्षेप करने वाले परिवर्तनीय

परिवर्तनीय कारक : यह परिवर्तनशील होता है। प्रयोग करने वाला प्रयोग के दौरान विभिन्न कारकों का उपयोग करता है। परिवर्तनीय कारक कई प्रकार के होते हैं: क) स्वतंत्रा परिवर्तनीय कारक या प्रयोग के परिणाम के रूप में, ख) निर्भर कारक, ग) हस्तक्षेप करने वाले परिवर्तनीय **कारक**: ऐसे परिवर्तनीय कारक जो बीच में ही हस्तक्षेप करते हैं या परिणाम को प्राप्त करते हैं।

जांच करने योग्य : जिसकी सत्यता की जांच की जा सकती है।

2.7 कुछ उपयोगी पुस्तकें और लेख

हग, रॉड, मार्टिन हैरप ऐंड शाउन ब्रसलिन, *कम्परेटिव गवर्नमेंट ऐंड पॉलिटिक्स,* मैकमिलन, लंदन, 1993, थर्ड एडिशन, (दूसरा अध्याय)

सरतोरी, गियोवानी, 'कम्परेटिव, व्हाई ऐंड हाउ,' मैटी डेगन ऐंड अली काजानसिगिल (सं.), *कम्पेयरिंग नेशन्स, कॉन्सेप्ट्स, स्ट्रेटज़ीस,* सब्सटैंस, ब्लैकवेल, ऑक्सफोर्ड, 1994

स्मेलसर, नील जे., *कम्परेटिव मेथड्स इन द सोशल साइंसेज,* प्रेन्टिस-हॉल, इंगलवुड क्लिस, 1976 (इंट्रोडक्शन)

2.8 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) अपने व्यक्तिगत अनुभव के आधार पर उत्तर दीजिए।

बोध प्रश्न 2

1) देखिए भाग 2.2

बोध प्रश्न 3

1) अनुमान के परीक्षण, कार्यकारण संबंध स्थापित करने और विश्वसनीय सामान्यीकरण करने के लिए तुलना की जाती है। इसीलिए इसमें वैज्ञानिक शोध के आवश्यक पहलूओं पर विचार किया जाता है जैसे सटीकता, वैधता, विश्वसनीयता और जांच योग्य।

2) देखिए उप-भाग 2.4.1

बोध प्रश्न 4

1) देखिए उप-भाग 2.4.1

2) इस इकाई में जो कुछ भी आपने सीखा है उस आधार पर डिजाइन तैयार कीजिए।